पानी उपलब्ध होता है। दक्षिण-पूर्वी मानसून म्यांमार, थाइलैंड आदि की ओर चला जाता है। कभी-कभी इस मानसून के कुछ बादल हिमालय की ओर मुड़कर भारत के उत्तर में वर्षा करते हैं। भारत में वर्षा से हर साल 30 अरब एकड़ फुट पानी मिलता है पर इसका अधिकांश जल वाष्प बन कर उड़ जाता है तथा नाले, नालियों में बहकर व्यर्थ चला जाता है। भारत में बड़ी नदियां लगभग 14 हैं, जिनका तटबन्ध क्षेत्र 20 हजार कि.मी. या इससे ऊपर है। दो हजार से बीस हजार कि.मी. वाली 44 नदियां हैं। फिर अनेक छोटी नदियां हैं। भारत को 90 प्रतिशत पानी बड़ी या मध्यम नदियों से प्राप्त होता है। कुछ पानी जमीन में जाकर एकत्र हो जाता है। इसमें जो पानी उपयोग में लाया जा सकता है उसकी मात्रा 25 खरब 50 क्यूबिक मीटर है। भारत में कुल पानी 190 खरब क्यूबिक मीटर है, लेकिन इसमें वह पानी सम्मिलित नहीं है जो नेपाल और बंग्ला देश में चला जाता है। प्रयोग में लाया जाने वाला पानी अधिक नहीं है। इसमें भी हमें कुछ पानी इकट्ठा करके रखना पड़ता है। वर्तमान में 15 प्रतिशत पानी संचय करने की व्यवस्था है। सिंचाई के अभाव में हमारा कृषि उत्पादन बढ़ नहीं पा रहा है। भारत का कृषि क्षेत्र अमरीका से दुगुना है, लेकिन उत्पादन आधा है। हमारे यहां बोई गई भूमि में मुश्किल से 25 प्रतिशत क्षेत्र ही पानी प्राप्त करता है। इसमें भी अधिकांश भाग तालाब आदि के अस्थाई पानी से सींचा जाता है। भविष्य में सिंचाई के अलावा बिजली बनाने तथा उद्योगों के कामों के लिए भी पानी की और आवश्यकता होगी। विश्व के कई देशों में एक नदी के पानी को दूसरी ओर मोड़कर पानी की समस्या हल की गई। भारत में इस दिशा में कुछ काम हुआ है। तमिलनाडु में पूर्वी भागों का पानी पेरियार की ओर मोड़ा गया है। यमुना का पानी भी पश्चिमी भाग की ओर मोड़ा गया है। सिन्धु को राजस्थान की ओर प्रवाहित किया गया है। लेकिन हमारी ये योजनाएं लघु स्तर की हैं। राष्ट्रीय स्तर पर इस दिशा में ठोस कदम उठाये जाने की आवश्यकता है।

आवश्यक है वर्षा जल का संग्रहण

भारत में वर्षा के दिनों में काफी जल प्राप्त होता है। इस जल को छोटे-छोटे बांधों और जलाशयों द्वारा एकत्र किया जा सकता है। बाद में इस जल का उपयोग सिंचाई और बिजली के कामों में किया जा सकता है। इसके लिए सबसे पहले उन क्षेत्रों की सूची तैयार की जानी चाहिए जहां गर्मी शुरू होते ही ताल-तलैया और कुएं सूख जाते हैं और भूगर्भ में भी जल स्तर घटने लगता है। ऐसे क्षेत्रों में कुछ बड़े-बड़े जलाशय बनाकर भूजल के स्तर को घटने से तो रोका जा सकता है साथ ही सिंचाई के लिए भी जल उपलब्ध कराया जा सकता है।

संपर्क करें :
श्री भाष्करानन्द डिमरी
(प्रवक्ता-हिन्दी)
रा.इ.का. सिमली
पो.ओ. सिमली, जिला-चमोली-246474
उत्तराखंड

स्वच्छ जल स्वस्थ जीवन

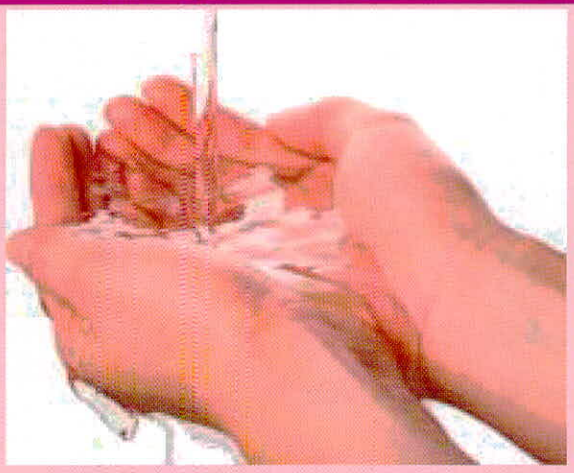

अति लोभी-भोगी मानव ने किया प्रकृति का निर्मम प्रहार।
अनगिनत वृक्षों को काट उसने सुखा दी निर्मल जलधार।।
कैसे बुझेगी मनुज की प्यास कैसे बंधेगी जीवन की आस।
जंगलों को उजाड़ कर मनुज कर रहा स्वयं अपना विनाश।।
उद्योगों के दूषित द्रव से हो गई गंगा - यमुना भी मैली।
रोगनाशिनी पुण्य प्रदायिनी स्वच्छ धार बन गई आज विषैली।।
जंगल काटे नगर बसाए महल किया ईंट गारों का खड़ा।
हवा पानी को तरस गया मानव रह गया सोच में पड़ा।।
मिलें लगायीं फैक्ट्रियां चलायीं उठा आकाश में धुएं का गुब्बार।
दूषित हुआ वायुमंडल धुआं पहुंचा ओजोन परत के पार।।
सुविधा के लिए सड़कें बनाईं बिछाया कंक्रीट और कोलतार।
पृथ्वी का तापमान बढ़ा चारों ओर मचा हा-हा कार।।
सांस लेना हुआ कठिन मिली न उचित मात्रा में ऑक्सीजन।
असाध्य रोग बढ़े अनगिनत संकट में पड़ा जग-जीवन।।
जल ही जीवन है करें हम जल स्रोतों का संरक्षण।
स्वच्छ रखें हम इनको करें इनका समुचित संवर्द्धन।।
जल भंडारण हो धरती पर ऐसा हम मिलकर करें उपाय।
खोदें बंजर व बेकार भूमि बनाएं उनमें तालाब व कुएं।।
भरेगा इनमें बरसाती जल सुखद होगा आने वाला कल।
प्यास बुझेगी मनुज की बढ़ेगी हरीतिमा धरती पर।।
जग जीवन का संबल है वृक्ष धरा का है यह आभूषण।
इसीलिए धरती पर हमको करना होगा सघन वृक्षारोपण।।
तभी नलकूप लगेंगे धरती पर, बनेगी नहर और गूलें।
जल संचित करना ही होगा हमें यह बात कभी न भूलें।।
स्वस्थ जीवन का आधार है स्वच्छ जल की धार।
आओ मिलकर रचें इतिहास बच्चे कम हों पेड़ हजार।।

संपर्क करें :
श्री भाष्करानन्द डिमरी
(प्रवक्ता-हिन्दी)
रा.इ.का. सिमली
पो.ओ. सिमली, जिला-चमोली-246474 उत्तराखंड